International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 22-02-2026, Accepted: 25-03-2026, Published: 09-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 50-51

भारतीय लोकतंत्र चुनौतियां एवं समाधान

डॉ. रजनी सोनवानी
राजनीति विज्ञान, चन्दूलाल चन्द्राकर शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
भारत संपूर्ण विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, जिसका मजबूत आधार समानता, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने वाला इसका संविधान है। एक आदर्श शासन व्यवस्था होने के बावजूद, वर्तमान में भारतीय लोकतंत्र भ्रष्टाचार, राजनीति के अपराधीकरण, जातिवाद, सांप्रदायिकता, अशिक्षा और मतदाता जागरूकता की कमी जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन समस्याओं के समाधान के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि नागरिकों का शैक्षिक व नैतिक उत्थान हो, समाज में आर्थिक समानता स्थापित हो, शासन में पारदर्शिता एवं जवाबदेही बढ़े, और स्वतंत्र मीडिया अपनी भूमिका प्रभावी ढंग से निभाए। अंततः, भारतीय लोकतंत्र की वास्तविक सफलता केवल सरकारी संस्थाओं पर नहीं, बल्कि जागरूक जनता की सक्रिय और जिम्मेदार सहभागिता पर ही निर्भर करती है।

मूल शब्दः लोकतंत्र, भारतीय संविधान, मौलिक अधिकार, राजनीतिक जागरूकता

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। जहां पर वयस्क मताधिकार द्वारा करोड़ों लोगों को अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार प्राप्त है। भारत देश में लोकतंत्र का मजबूत आधार हमारा संविधान है जिसको 26 जनवरी 1950 को लागू किया गया, हमारा संविधान विश्व का सबसे बड़ा व लिखित संविधान है जिसके रचयिता डॉ भीमराव अंबेडकर है जो कानून विद, समाज सुधारक और संविधान सभा के अध्यक्ष थे जिनके मार्गदर्शन में संविधान की रचना हुई है और संविधान में मौलिक अधिकारों द्वारा नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता, शिक्षा, न्याय और संवैधानिक अधिकार प्रदान किए गए हैं जो कि लोकतंत्र का आधार है। लोकतंत्र में जनता का जनता के लिए और जनता के द्वारा शासन इस माध्यम से भारत की जनता को भाषा, धर्म, संप्रदाय, जाति, संस्कृति आदि में विविधता होते हुए भी लोकतंत्र में राष्ट्रीय एकता अखण्डता और भाई–चारे को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और भारत की समस्त जनता को स्वतंत्रता व समानता प्रदान करते हुए सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार, स्वतंत्र न्यायपालिका, निष्पक्ष चुनाव, उत्तरदायी सरकार, जनता की सहभागिता, सामाजिक न्याय, अधिकारों की रक्षा का प्रावधान किया गया है।

लोकतंत्र वर्तमान आधुनिक विश्व की सबसे महत्वपूर्ण और व्यापक रूप से स्वीकृत शासन व्यवस्था है। इस व्यवस्था में शासन की शक्ति जनता के हाथों में निहित होती है और जनता अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से शासन को संचालित करती है। लोकतंत्र केवल एक राजनीतिक धंधा नहीं बल्कि एक जीवन दर्शन है जिसमें सरकार जनता के प्रति उत्तरदायी होती हैं। जो स्वतंत्रता, समानता, न्याय, मानवीय गरिमा जैसे मूल्यों पर आधारित है, और सत्ता के दुरुपयोग को रोकने के लिए स्वतंत्र न्याय पालिका, स्वतंत्र प्रेस, जागरूक नागरिक, सामाजिक लोकतांत्रिक व्यवस्था इसके प्रमुख स्तंभ है।

वर्तमान समय में संचालित लोकतांत्रिक विचारधारा का विकास एक लंबी ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है। प्राचीन युनान में एथेस को लोकतंत्र की जन्म स्थलीय माना जाता है। जहां पर जनता प्रत्यक्ष रूप से शासन के निर्णयों में भाग लेते थे लेकिन उस समय लोकतंत्र सीमित अवस्था में थी क्योंकि वहां पर महिलाओं, दासों और विदेशी नागरिकों को किसी प्रकार का अधिकार प्राप्त नहीं थे।

मध्यकाल में लोकतंत्र की अवधारणा ज्यादा प्रचलित नहीं थी, लेकिन बाद में पुनर्जागरण और प्रबोधन काल में यह पुनः सशक्त रूप में प्रचारित हुआ। जॉन लॉक, रूसो माटेवस्क्यू और मिल जैसे विचारको ने लोकतंत्र को पुनः आधार प्रदान किया और आधुनिक युग में लोकतंत्र प्रतिनिध्यात्मक प्रणाली के रूप में विकसित हुआ, जिसमें जनता अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से शासन करती है। आधुनिक लोकतंत्र का विचार कई ऐतिहासिक संघर्ष, सामाजिक परिवर्तनों, आंदोलन, कुरितियों और वैचारिक आंदोलनों का परिणाम है। जिसके मध्यकालीन निरंकुश राजतंत्रों के विरुद्ध संघर्ष, पुनर्जागरण, फॉसिसी क्रांति, अमेरिकी क्रांति, दार्शनिक विचारधारा सम्मिलित है। वर्तमान आधुनिक लोकतंत्र की आत्मा संविधान में निहित है। संविधान वह मूल दस्तावेज है जो शासन की संरचना करती है नागरिकों के अधिकार और कर्तव्य को बताती है, सभी शक्तियों को सीमित करती है।

लोकतंत्र का महत्व केवल राजनीतिक गतिविधियों तक सीमित नहीं है। बल्कि यह आर्थिक, सामाजिक, अवसर की समानता, सामाजिक न्याय को बढ़ावा देती है। वह यह बताती है कि लोकतंत्र में नागरिक की भूमिका महत्वपूर्ण है। लोकतंत्र की सफलता–असफलता केवल सरकार और संस्थाओं तक सीमित नहीं बल्कि नागरिकों की सक्रिय सहभागिता, जागरूकता और नागरिकों के अधिकारों और कर्तव्यों के पालन के ऊपर निर्भर करती है।

डॉ बेनी प्रसाद के अनुसार

''लोकतंत्र जीवन का एक ढंग है। यह इस मान्यता पर आधारित है कि प्रत्येक व्यक्ति के सुख का महत्व उतना ही है जितना की अन्य किसी के सुख का महत्व हो सकता है तथा किसी को भी अन्य किसी के सुख का साधन मात्र नहीं समझा जा सकता ।''

लोकतंत्र मानवीय सभ्यता और व्यक्ति के रूप में, महत्व पर आधारित एक ऐसा जीवन मार्ग है। जिसका उद्देश्य–राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, तथा विविध क्षेत्रों के अधिक से अधिक समानता की स्थापना करना और एक सहयोगी समाज की रचना करना है।

लोकतंत्र की चुनौतियां एवं समाधान

मानव जाति के प्रारंभिक काल से लेकर आज वर्तमान तक विभिन्न प्रकार की शासन व्यवस्थाएं विद्यमान रही है। इन शासन व्यवस्थाओं में राजतंत्र, अधिनायकतंत्र, कुलीनतंत्र व लोकतंत्र प्रमुख है। अरस्तु के समय से लेकर आज वर्तमान तक शासन व्यवस्था में राजतंत्र कुलीनतंत्र और लोकतंत्र की महत्वपूर्ण भूमिका

रही है। जिसमें यह अनुभव किया गया कि राजतंत्र व कुलीनतंत्र जनता के हित के कार्यो को करके कुछ विशिष्ट वर्गो व विशेष व्यक्तियों तक सीमित थे और ये शासनतंत्र जनता के प्रति उत्तरदायी नहीं थे इसलिए ये निरंकुश थे और शासन शक्ति का भ्रष्ट रूप में उपयोग किया करते थे। इन्हीं कारणो से शासन के स्वरूप में परिवर्तन की अवश्यकता महसूस की गई और भारत की जनता के लिए लोकतंत्र के स्वरूप को अपनाया गया जिसमें जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप में शासन किया जाने लगा और जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा शासन किया जाने लगा और शासन सत्ता में आने के बाद जनता के कल्याण के लिए कार्य किया जाने लगा तथा लोकतंत्र के प्रत्यक्ष लोकतंत्र और अप्रत्यक्ष लोकतंत्र की अवधारणा का विकास हुआ ।

लोकतंत्र की इस अवधारणा में स्वतंत्रता, समानता, भातृत्व, न्याय, पर आधारित शासन की व्यवस्था किया गया। ना कि पीढ़ी दर पीढ़ी राजा का बेटा राजा बनेगा या एक ही पीढ़ी को बार–बार मौका दिया जाएगा, लोकतंत्र में लोक प्रभुता पर विश्वास, लोकप्रिय व नियतकालिक चुनाव, उत्तरदायित्व की सरकार, राजनीति व नागरिक सामानता, नियंत्रण, अधिकार, कर्तव्यों की व्याख्या तथा बहुमत का शासन, शक्ति विभाजन और स्वतंत्र न्यायपालिका राजनीतिक व नागरिक स्वतंत्रताऐ, व्यक्ति के व्यक्तित्व का सम्मान, और गौरव लिखित संविधान पर आधारित शासन व्यवस्था, जनकल्याण की धारणा, कुशल प्रशासन, मनोविज्ञान के अनुकूल, सार्वजनिक राजनीतिक शिक्षण, विश्व शांति का समर्थन, समानता और स्वतंत्रता पर आधारित, जनता का नैतिक उत्थान, देशभक्ती की भावना रखने वाला तथा प्रकृति से सुरक्षा प्रदान करने वाला, शासन व्यवस्था का स्वरूप है लोकतांत्रिक गणराज्य जिसको भारत की जनता ने एतद द्वारा स्वीकार किया है। जहां समस्त नागरिकों को समान भाव से बिना किसी भेदभाव के समान अधिकार कर्तव्य व दण्ड की व्यवस्था करती है।

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में इतनी समानता और गुणो के होने के बावजूद इसके कुछ ऐसी चुनौतियां है। जो उसको सफल लोकतंत्र होने से रोकती है। जो भारत की जनता के कल्याण उनके विकास और भविष्य को नष्ट करने में लगी हुई है। इन चुनौतियों का दिन– प्रतिदिन बढते जाना सफल लोकतंत्र के लिए एक प्रश्न चिन्ह बनता जा रहा है। जिसमे प्रथम स्थान पर भ्रष्टाचार या भ्रष्टाचरण है जो लोकतंत्र की सबसे गंभीर समस्या है, शासन स्तर पर सभी विभागों में रिश्वतखोरी, घोटाले, पद का दूरूप्रयोग, काम को टालने की प्रवृत्ति देश के विकास में सबसे बड़ी बाधा है। इसके अलावा राजनीति का अपराधीकरण जिसमें कई जन प्रतिनिधियों का अपराधिक रिक□र्ड होते हुए भी उसे शासन सत्ता व राजनीति में प्रवेश दिया जा रहा है और तो और जातिवाद व सांप्रदायिकता की भावना को बढ़ाना जाती व धर्म के आधार पर वोट मांगना समाज में जाति के आधार पर बटवारा करना भी।

लोकतंत्र को कमजोर कर रही है। जनता की अशिक्षा और राजनीतिक जागरूकता की कमी के कारण भी मतदाता अपने अधिकारों और कर्तव्यो के प्रति पूर्णतः जागरूक नहीं है, और मीडिया और फेक न्यूज लोकतांत्रिक निर्णय प्रक्रिया को प्रभावित करती है। भ्रष्ट शासन व्यवस्था और सार्वजनिक धन और समय का अव्यय भी लोकतंत्र के विकास में बाधा और चुनौतियां उत्पन्न करती है। अनुत्तरदायी शासन तथा मतदाताओं की उदासीनता और पेशेवर राजनितियों का विकास जो कि योग्य और ईमानदार व्यक्ति को राजनीति में आने नहीं देते। और राजनीति को धन्धा बना लेते है युद्ध और संकट के समय लोकतंत्रीय शासन व्यवस्था निर्बल सि़द्ध हो जाति है क्योंकि आवश्यकतानुसार शीघ्रता से निर्णय नहीं ले पाते है, लोकतंत्रीय शासन व्यवस्था में अनेक गुणो के साथ कुछ कमियॉ भी है इसलिए समय अनुसार इनमें परिणाम प्राप्त नहीं हो सकते है। लेकिन लोकतंत्र की सफलता के लिए यदि प्रयत्न किया जाऐ तो लोकतंत्र को सफल बनाया जा सकता है, क्योंकि आधुनिक समय में लोकतंत्रिक व्यवस्था द्वारा शासक की व्यवस्था से ही जनता का कल्याण संभव है नहीं तो जनता का शोषण होता रहेगा, लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में लोकतंत्र शासन को सफल बनाने के लिए नागरिको का नैतिक उत्थान होना, तथा जनता को शिक्षित एंव जागरूक होना और समाज में एकता की भावना का होना, लिखित संविधान और प्रजातांत्रिक परम्पराएं तथा समानता पर आधारित सामाजिक व्यवस्था जहॉ धर्म, जाति, रंग, सम्प्रदाएँ के अधार पर भेद भाव की समाप्ति का होना है। साथ ही साथ आर्थिक समानता, नागरिक स्वतंत्रताऐ, स्वस्थ और शुढ़ड़, राजनीतिक दल, न्यायप्रिय बहुमत और सहनशील अल्पमत बुद्धिमान और सतर्क नेतृत्व, योग्य और निश्पक्ष नागरिक सेवाऐ और तेरे मेरे की भावना से हट कर विश्व शांति की स्थापना करने की भावना और सतत प्रयास से ही लोकतंत्र को मजबूत आधार प्रदान किया जा सकता है और लोकतंत्र को प्रचण्ड वायु के झोके भी लोकतंत्र की नींव को हिला नहीं पायेगी और यदि ये सभी बाते पुरी नहीं हुई तो लोकतंत्र की शक्तिशाली पॉव भी किचड़ में धंस सकते है और लोकतंत्र की सफलता पर प्रश्न चिन्ह उठ सकता है।

निष्कर्ष

भारत में लोकतंत्र का भविश्य जागरूक जनता और उसकी भागीदारी पर निर्भर करती है। जनता को मौलिक अधिकार, स्वतंत्रता, समानता न्याय और संवैधानिक अधिकार प्रदान करने से लोकतंत्र मजबूत तो होता है, लेकिन जब तक जनता अपने कर्तव्यों, उत्तरदायित्वों और अधिकारों का सही तरह से पालन नहीं करता है। तब तक लोक तंत्र सफल नही हो सकता है। क्योंकि लोकतंत्र शासन या सरकार तक सीमित नहीं है यह प्रत्येक जिम्मेदार नागरिक की सक्रिय भागीदारी के ऊपर निर्भर करती है। साथ ही साथ कुछ आवयश्क परिस्थियों पर भी निर्भर करती है। जैसे–

1. नागरिकों का नैतिक उत्थान करके ।
2. नागरिकों को शिक्षित एवं जागरूक करके।
3. आर्थिक समानता।
4. पारदर्शिता और जवाबदेहिता बढाकर।
5. तकनीकी सुधार और ई गवर्नेस अपनाकर।
6. राजनीतिक दलों में सुधार करके।
7. स्थानीय लोगें को शासन में शामिल करके।
8. समान अवसर और न्याय प्रदान करकें।
9. सशक्त मीड़ियां/स्वतंत्र पत्रकारिता द्वारा।
10. सहभागिता और सामाजिक मूल्यो द्वारा।

ब्राइस के अनुसार–

''लोकतंत्र शासन का वह प्रकार है। जिसमें राज्य के शासन की शक्ति किसी विशेश वर्ग या वर्गो में निहित न होकर सम्पूर्ण जन समुदाय में निहित है।''

अर्थात् लोकतंत्र वह शासन है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति शासन का एक भाग होता है।

संदर्भ सूची

1. भारत में लोकतंत्र – डॉ. बी. एल. फड़िया
2. मानव अधिकार एवं भारतीय लोकतंत्र – पुनीत कुमार
3. राजनीतिक स्थिति का परिचय – डॉ. पुखराज जैन
4. भारतीय लोकतंत्र – डॉ. सुभान कश्यप
5. भारतीय शासन और राजनीति – एम. लक्ष्मी कांत